E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

इन्द्रसूक्तम् (1 से 8 मन्त्र तक)

वेद-ऋग्वेद	मण्डल- संख्या-२	सूक्त- संख्या- १२
ऋषि-गृत्समद्	देवता- इन्द्र	छन्द- त्रिष्टुप्

यो जात एव प्रथमो मनस्वा-

न्देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत्।

यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां

नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः॥१॥

पदपाठ-यः। जातः। एव। प्रथमः। मनस्वान्। देवः। देवान्। क्रतुना। परिऽअभूषत्॥ यस्य। शुष्मात्। रोदसी इति। अभ्यसेताम्। नृम्णस्य मह्ना।सः । जनासः। इन्द्रः॥

सा०भा०- गृत्समदो ब्रूते। जनासः जना हे असुराः यो जात एव जायमान एव सन् प्रथमः देवानां प्रधानभूतः मनस्वान् मनस्विनामग्रगण्यः देवः द्योतमानः सन् क्रतुना वृत्रवधादिलक्षणेन स्वकीयेन कर्मणा देवान् सर्वान् यागदेवान् पर्यभूषत् रक्षकत्वेन पर्यग्रहीत् अत्यक्रामत्। यस्येन्द्रस्य शुष्मात् शारीरात् बलात् रोदसी द्यावापृथिव्यौ अभ्यसेतामविभीताम् नृम्णस्य सेनालक्षणस्य बलस्य मह्ना महत्त्वेन युक्त स इन्द्रः नाहमिति।

अन्वय- यः प्रथमः मनस्वान् देवः जातः एव क्रतुना देवान् पर्यभूषत् यस्य शुष्मात् रोदसी अभ्यसेताम्, जनासः! नृम्णस्य मह्ना सः इन्द्रः।

पदार्थ- यः= जो, जिसने, प्रथमः= प्रधान, प्रमुख, मनस्वान् = मनस्वी, बुद्धिमान्, देवः = देव ने, जातः एव= उत्पन्न होते ही, क्रतुना = पराक्रम से; शक्ति से, कर्म से, देवान्= देवों को, पर्यभूषत्= अभिभूत कर लिया, अतिक्रमण किया, यस्य जिसकी, शुष्मात्= बल से, शक्ति से पराक्रम से, रोदसी= द्युलोक और पृथिवी-लोक, अभ्यसेताम्= डर गये, काँप गये, जनासः= हे मनुष्यों!, नृम्णस्य = महान् बल की, मह्ना= महिमा से, महत्त्व से युक्त, सः = वह, इन्द्रः = इन्द्र।

अनुवाद- **जिस प्रमुख (एवं) मनस्वी देव ने उत्पन्न होते ही (अपने) पराक्रम से देवों को अभिभूत कर लिया (अथवा देवताओं का अतिक्रमण किया); जिसकी शक्ति से द्युलोक और पृथिवीलोक काँप गये, हे लोगों! महान बल की महिमा से युक्त वह इन्द्र है।**

व्याकरण-

१. जातः- √ जन् + क्त, प्रथमा एकवचन।

२. मनस्वान्- मनस् + मतुप् (वतुप्), प्रथमा एकवचन।

३. पर्यभूषत्- परि + √भूष् + लङ् प्रथम पुरुष एकवचन।

४. अभ्यसेताम्- √भ्यस् + लङ् प्रथम पुरुष द्विवचन।

५. मह्ना- महिम्ना का वैदिक रूप।

६. जनासः- जन शब्द के सम्बोधन बहुवचन का वैदिक रूप है। लौकिक संस्कृत में जनाः रूप बनता है।

यः पृ॑थि॒वीं व्यथ॑माना॒मदृं॑ह-

द्यः पर्व॑ता॒न्प्रकु॑पिताँ॒ अर॑म्णात्।

यो अ॒न्तरि॑क्षं विम॒मे वरी॑यो॒

यो द्यामस्त॑भ्ना॒त्स ज॑नास इन्द्रः॥२॥

पदपाठ– यः। पृ॒थि॒वीम्। व्यथ॑मानाम्। अदृं॑हत्। यः। पर्व॑तान्। प्रऽकु॑पितान्। अर॑म्णात्॥ यः। अ॒न्तरि॑क्षम्। वि॒ऽम॒मे। वरी॑यः। यः। द्याम्। अस्त॑भ्नात्। सः। ज॒नासः। इन्द्रः॑॥

सा०भा०- हे जनाः! यः इन्द्रः व्यथमानां चलतीं पृथिवीम् अदृंहत् शर्करादिभिर्दृढामकरोत्। 'दृहं दृहि बृद्धौ'। यः च प्रकुपितान् इतस्ततश्चलितान् पक्षयुक्तान् पर्वतान् अरम्णात् नियमितवान् स्वे स्वे स्थाने स्थापितवान्। यश्च वरीयः उरुतममन्तरिक्षं विममे निर्ममे विस्तीर्णं चकारेत्यर्थ। यः च द्यां दिवमस्तभ्नात् अस्तम्भ निरुद्धामकरोत्। सः एव इन्द्रः नाहमिति।

अन्वय- यः व्यथमानां पृथिवीम् अदृंहत, यः प्रकुपितान् पर्वतान् अरम्णात्, यः वरीयः अन्तरिक्षम् विममे, यः द्याम् अस्तभ्नात्, जनासः! सः इन्द्रः।

पदार्थ- यः= जिसने, व्यथमानाम्= काँपती हुई, डगमगाती हुई, पृथिवीम्= पृथ्वी को, अदृंहत्= दृढ़ किया, स्थिर किया, यः= जिसने, प्रकुपितान्= इधर-उधर उड़ने वाले, इधर-उधर चलने वाले, पर्वतान्= पर्वतों को, अरम्णात्= नियमित किया, स्थापित किया, यः = जिसने, वरीयः= विस्तृत, अन्तरिक्षम्=अन्तरिक्ष को, विममे= विशेष रूप से नापा, निर्माण किया, यः= जिसने, द्याम्= द्युलोक को, अस्तभ्नात् = रोका, निरुद्ध किया, थामा, जनासः= हे लोगों, मनुष्यों, सः= वह, इन्द्रः= इन्द्र।

अनुवाद- **जिसने काँपती हुई डगमगाती हुई पृथ्वी को स्थिर किया, जिसने उड़ने वाले पर्वतों को (अपने-अपने स्थान पर) स्थापित किया, जिसने विस्तृत अन्तरिक्ष को मापा (अथवा विस्तृत अन्तरिक्ष का निर्माण किया); जिसने द्युलोक को (गिरने से) रोका (अथवा द्युलोक को थामा) हे लोगों! वह इन्द्र है।**

व्याकरण-

१. व्यथमानाम्- √व्यथ् + शानच् + टाप् द्वितीया एकवचन।

२. अदृंहत्-दृंह् + लङ् प्रथमपुरुष एकवचन।

३. प्रकुपिताँ- प्र + √ कुप् + क्त, द्वितीया बहुवचन। ऋग्वेद में आ पूर्व में तथा स्वर बाद में होने पर पदान्त नकार का लोप होकर पूर्ववती स्वर अनुनासिक हो जाता है। इसलिए यहाँ 'प्रकुपिताँ' रूप हुआ है।

४. अरम्णात्- √ रम् + श्ना लङ् प्रथमपुरुष एकवचन।

५. विममे- वि + √मा लिट्, प्रथमपुरुष एकवचन।

६. अस्तभ्नात्- स्तम्भ्+ लङ्, प्रथमपुरुष एकवचन

यो हत्वाहि॒मरि॑णात्स॒प्त सिन्धु

न्यो गा उ॒दाज॑दप॒धा ब॒लस्य॑।

यो अश्म॑नोर॒न्तर॒ग्निं ज॒जान॑

सं॒वृक्स॒मत्सु स ज॑नास॒ इन्द्रः॑॥३॥

पदपाठ– यः। हत्वा। अहि॑म्। अरि॑णात्। स॒प्त। सिन्धु॑न्। यः। गाः। उ॒त्ऽआज॑त्। अ॒प॒ऽधा। ब॒लस्य॑॥ यः। अश्म॑नोः। अ॒न्तः। अ॒ग्निम्। ज॒जान॑। स॒म्ऽवृक्। स॒मत्सु॑ सः। ज॒नासः॒। इन्द्रः॑॥

सा०भा०- यः अहिं मेघहननं कृत्वा सप्त सर्पणशीलाः सिन्धून् स्यन्दनशीला अपः अरिणात् प्रेरयत्। यद्वा सप्त गङ्गायमुनाद्या मुख्या नदीररिणात्। 'रीङ् स्रवणे' क्रयादिः। यः च बलस्य बलनामकस्यासुरस्य अपधा तत्कर्तृकान्निरुद्धाः गाः उदाजत् निरगमयत्। यश्चाश्मनोः, अश्नुते व्याप्नोत्यन्तरिक्षमित्यश्मा मेघः। अत्यन्त मृदुरूपयोर्मेघयोः अन्तः मध्ये वैद्युतमग्निं जजान उत्पादयामास। यश्च समत्सु संवृक् भवति सः इन्द्रः नाहमिति।

अन्वय- यः अहिं हत्वा सप्तसिन्धून् अरिणात्, यः बलस्य अपधा गाः उदाजत्, यः अश्मनोः अन्तः अग्निं जजान समत्सु संवृक् जनासः! सः इन्द्रः।

पदार्थ- यः= जिसने, अहिम्= वृत्र नामक असुर को, जल को रोकने वाले मेघ को, हत्वा= मारकर, सप्त= सात, सिन्धून्= नदियों को, अरिणात्= प्रवाहित किया, बहाया, यः = जिसने, बलस्य= बल नामक असुर (बलासुर) की, अपधा = गुफा से, बाड़े से, गाः= गायों को, उदाजत् = बाहर निकाला, यः= जिसने, अश्मनोः= बादलों के, पत्थरों के, अन्तः= मध्य में, अग्निम्= अग्नि को, जजान= उत्पन्न किया, समत्सु= युद्धों में, संवृक्= विनाश करने वाला, जनासः= लोगों, सः= वह, इन्द्रः= इन्द्र।

अनुवाद- **जिसने वृत्र को मारकर सात नदियों को प्रवाहित किया, जिस बल नामक असुर की गुफा से गायों को बाहर निकाला, जिसने दो बादलों (अथवा पत्थरों) के मध्य में अग्नि को उत्पन्न किया, जो युद्धों में (शत्रु का) विनाश करने वाला है, हे लोगो! वह इन्द्र है।**

व्याकरण-

१. हत्वा– √हन् + क्त्वा।

२. अरिणात् √रीङ् (रि) + लङ् प्रथम पुरुष एकवचन।

३. अपधा- अप् + √धा + अङ्, पञ्चमी एकवचन।

४. समत्सु- सम्+√अद्+क्विप् सप्तमी बहुवचन

५. उदाजत्- उत् + √अज् + लङ, प्रथमपुरुष एकवचन।

६. जजान- √जन् + लिट्, प्रथम पुरुष एकवचन।

७. संवृक्- सम् + √वृज् + क्विप्, प्रथमा एकवचन।

येने॒मा विश्वा॒ च्यव॑ना कृ॒तानि॒

यो दासं॒ वर्ण॒मध॑रं गुहाकः॑।

श्व॒घ्नीव॒ यो जि॑गी॒वाँ लक्षमाद॑-

द॒र्यः पु॒ष्टानि॒ स ज॑नास॒ इन्द्रः॥४॥

पदपाठ-येन॑।इमा॑। विश्वा॑। च्यव॑ना। कृ॒तानि॑। यः। दास॑म्। वर्ण॑म्। अध॑रम्। गुहा॑। अकु॒रित्यकः॑। श्व॒घ्नीऽइ॑व। यः। जि॒गी॒वान्। ल॒क्षम्। आद॑त्। अ॒र्यः। पु॒ष्टानि॑। सः। ज॒ना॒सः॒। इन्द्रः॥

सा० भा०- येन इन्द्रेण इमा इमानि विश्वा च्यवना नश्वराणि भुवनानि कृतानि स्थिरीकृतानि। यः च दासं वर्णं शूद्रादिकम् यद्वा दासपक्षपयितारम्। अधरं निकृष्टमसुरं गुहा गुहायां गूढस्थाने नरके वा अकः अकार्षीत्। यः अर्यः अरेः शत्रोः संबन्धीनि पुष्टानि आदत् आदत्ते। तत्र दृष्टान्तः। श्वघ्नीव । श्वभिर्मृगान् हन्तीति श्वघ्नी व्याधः। यथा व्याधो निवृक्षितं मृगं परिगृह्णाति तद्वत्।

अन्वय– येन इमा विश्वा च्यवना कृतानि, यः अधरम् दासम् वर्णम् गुहा अकः यः श्वघ्नीव लक्षम् जिगीवान्, सः अर्यः पुष्टानि आदत्, जनासः! सः इन्द्रः।

पदार्थ- येन=जिसके द्वारा, इमा= ये, विश्वा= सम्पूर्ण, च्यवना= गतिशील, नश्वर, कृतानि= कर दी गई, यः= जिसने, अधरम्= निकृष्ट, नीच, दासम् वर्णम्= दास वर्ण को, दास जाति को, गुहा= गुफा में, गूढ स्थान में, अकः= कर दिया, यः= जिसने श्वघ्नीव= व्याध (शिकारी) की भाँति, जुआरी की भाँति, लक्षम्= लक्ष्ण को, दाँव को, जिगीवान्= जीते हुए, जीत कर, अर्यः= शत्रु के, पुष्टानि= धनों को, आदत्= ग्रहण किया, छीन लिया, जनासः= हे लोगों! सः= वह, इन्द्रः= इन्द्र।

अनुवाद- **जिसके द्वारा ये सम्पूर्ण (वस्तुएँ) गतिशील कर दी गई हैं, जिसने निकृष्ट दास वर्ण को गुफा (या नरक) में कर दिया है, अपने शिकार को जीत लेने वाले शिकारी की भाँति (या दाँव को जीत लेने वाले जुआरी की भाँति) जिसने शत्रु के धनों को छीन लिया है, हे लोगों। वह इन्द्र है।**

व्याकरण-

१. इमा, विश्वा, च्यवना– नपुंसकलिङ्ग प्रथमा का बहुवचन (वैदिक रूप) = इमानि, विश्वानि, च्यवनानि; लौकिक रूप।

२. गुहा- (वैदिक रूप) सप्तमी के प्रत्यय का लोप हो गया है। लौकिक संस्कृत में गुहायाम् रूप होता है।

३. अकः - √कृ + लुङ्, प्रथमपुरुष एकवचन (वैदिक रूप)।

४. जिगीवाँ- जि + क्वसु, प्रथमा एकवचन। वैदिक संधि के नियमविशेष से नकार अनुनासिक हो गया है अतः संहिता में जिगीवाँ है।

५. अर्यः- अरि के षष्ठी एकवचन अरेः का (वैदिक रूप)।

६. आदत्- आ + √दा + लुङ् प्रथम पुरुष एकवचन (वैदिक रूप)।

यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोर-

मुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम्।

सो अर्यः पुष्टीर्विज इवा मिनाति

श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः॥ ५॥

पदपाठ– यम्। स्म। पृच्छन्ति। कुह। सः। इति । घोरम्। उत। ईम्। आहुः। न। एषः। अस्ति। इति। एनम्॥ स। अर्यः। पुष्टीः। विजः ऽइव। आ। मिनाति। श्रुत्। अस्मै। धत्त। सः। जनासः। इन्द्रः॥

सा०भा०- अपश्यन्तो जनाः घोरं शत्रूणां घातकं यं पृच्छन्ति स्म कुह सेति। स इन्द्रः कुत्र वर्तते। इति। सेति। 'सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम्' इति सोर्लोपे गुणः। न क्वचिदसौ तिष्ठतीति मन्यमानः एनम् इन्द्रम् आहुः एषः इन्द्र न अस्तीति। तथा च मन्त्रः-'नेन्द्रः अस्तीति नेम उत्व आह' (ऋ०सं० ८.१००.३) इति। ईम् इति पूरणः। सः इन्द्र विज इव। इवशब्द एवार्थे। उद्वेजक एव सन्। अर्यः अरेः सबन्धीनि पुष्टीः पोषकाणि गवाश्वादीनि धनानि आ मिनाति सर्वतो हिनस्ति। मीङ्हिंसायाम्। 'मीनातेर्निगमे' इति ह्रस्वः। तस्मात् श्रदस्मै इन्द्राय धत्त। स इन्द्रोऽस्तीति विश्वासमत्र कुरुत। यद्यप्यसौ विशेषतोऽस्माभिर्न दृश्यते तथापि अस्तीति। विश्वासं कुरुत। एवं निर्धारणीयमहिमोपेतः सः इन्द्रः नाहमिति।

अन्वय- यं घोरम् सः कुह इति पृच्छन्ति, उत एनम् एषः न अस्ति इति आहुः सः विजः इव अर्यः पुष्टीः आ मिनाति अस्मै श्रत् धत्त, जनासः! सः इन्द्रः।

पदार्थ– यम् घोरम्= जिस भयंकर (देवता) के विषय में, सः= वह, कुह= कहाँ, इति= ऐसा, इस प्रकार, पृच्छन्ति= पूछते हैं, उत= और, ईम् = पाद की पूर्ति हेतु निपात, एनम्= जिसके (इसके) विषय में, एषः= यह, न= नहीं, अस्ति= है, इति= ऐसा, इस प्रकार, आहुः= कहते हैं, सः = वह, विजः इव= विजेता की भाँति, जुआरी की तरह, अर्यः= शत्रु के, पुष्टीः= धन को, सम्पत्ति को, आ मिनाति= नष्ट कर देता है, छीन लेता है, अस्मै= इसके लिए, इसमे!, श्रुत्= श्रद्धा, धत्त= धारण करो, जनासः= हे मनुष्यों! सः= वह, इन्द्रः= इन्द्र है।

अनुवाद- **जिस भयङ्कर (देवता) के विषय में 'वह कहाँ है?' ऐसा (लोग) पूछते हैं; और जिसके विषय में 'यह नहीं है' इस प्रकार (भी) लोग कहते हैं, वह (देवता) विजेता की भाँति शत्रु के धन**

को पूर्णतः नष्ट कर देता है (बलपूर्वक छीन लेता है); हे लोगों! वह इन्द्र है। इसमें श्रद्धा धारण करो।

व्याकरण-

१. कुह्- किम् + ह, (वैदिक)।

२. सेति- सः + इति, विसर्ग का लोप होकर पादपूरणार्थ गुणसंधि हुई है।

३. पृच्छन्ति- √ प्रच्छ् + लट्, प्रथमपुरुष बहुवचन

४. आहुः- ब्रू (आह) लट् या लिट् प्रथमपुरुष बहुवचन।

५. अर्यः- अरि का षष्ठी एकवचन का वैदिक रूप, लौकिकसंस्कृत में अरेः रूप होता है।

६. पुष्टीः- √पुष् + क्तिन् + द्वितीया बहुवचन।

७. मिनाति- √मी + लट् प्रथमपुरुष एकवचन, (वैदिक रूप)।

८. धत्त-√धा लोट् मध्यमपुरुष बहुवचन।

यो र॒ध्रस्य॑ चोदि॒ता यः कृ॒शस्य॒

यो ब्र॒ह्मणो॒ नाध॑मानस्य की॒रेः।

युक्तग्रा॑व्णो॒ योऽवि॒ता सु॑शि॒प्रः

सुतसो॑मस्य॒ स जना॑स इन्द्र॒ः॥६॥

पदपाठ- यः। र॒ध्रस्य॑। चोदि॒ता। यः। कृ॒शस्य॑। यः। ब्र॒ह्मण॑ः। नाध॑मानस्य। की॒रेः। युक्तऽग्रा॑व्णः। यः। अ॒वि॒ता॒। सु॒ऽशि॒प्रः। सुतऽसो॑मस्य।सः। ज॒ना॒स॒ः। इन्द्र॑ः॥

सा०भा०- यो रध्रस्य। 'रध् हिंसासंराद्धयोः। समृद्धस्य चोदिता धनानां प्रेरयिता भवति। यः च कृशस्य च दरिद्रस्य च, यः च नाधमानस्य। नाधृणाधृयाच्चो पतापैश्वर्याशीःषु'। याचमानस्य कीरेः। करोतेः कीर्तयतेर्वा। स्तोतुः ब्रह्मणः ब्राह्मणस्य च धनानां प्रेरयिता। यः च सुशिप्रः शोभनहनुः सुशीर्षको वा सन् युक्तग्राव्णः सुतसोमस्य अभिषुतसोमस्य यजमानस्य अविता रक्षिता भवति सः एव इन्द्रः नाहमिति।

अन्वय- यः रध्रस्य चोदिता, यः कृशस्य यः नाधमानस्य कीरेः ब्रह्मणः सुशिप्रः, यः युक्तग्राव्णः सुतसोमस्य अविता, जनासः सः इन्द्रः।

पदार्थ-यः= जो, रध्रस्य= समृद्ध का, धनवान् का, चोदिता= प्रेरक, प्रेरणा देने वाला, यः= जो, कृशस्य= दरिद्र का निर्धन का, यः जो, नाधमानस्य= याचना करने वाले, कीरेः= स्तोता (स्तुति करने वाले का, स्तुतिगायक का, ब्रह्मणः= पुरोहित का, सुशिप्रः= सुन्दर हनु (ठोड़ी) वाला, सुन्दर ओष्ठ वाला, सुन्दर बालों वाला, यः= जो, युक्तग्राव्णः= पत्थरों को तैयार किये हुए का, पत्थरों को संयोजित करने वाले का, सुतसोमस्य= सोम रस को निचोड़ने वाले का, सोम को पीस लेने वाले का, अविता= रक्षक, जनासः= हे लोगों! सः= वह, इन्द्रः= इन्द्र।

अनुवाद- **जो समृद्धिशाली व्यक्ति का प्रेरक है, जो निर्धन का (प्रेरक है); जो याचना करने वाले तथा स्तुति करने वाले पुरोहित का (प्रेरक) है; सुन्दर हनु वाला (अथवा सुन्दर ओष्ठ वाला) जो (सोम पीसने के लिए) पत्थरों को तैयार करने वाले तथा सोम रस को निचोड़ने वाले (यजमान) का रक्षक है, हे लोगों! वह इन्द्र है।**

व्याकरण-

१. नाधमानस्य– √नाध् + शानच्, षष्ठी एकवचन।

२. कीरेः - √कृ + इ, वैदिक रूप।

३. अविता - √अव + तृच् + प्रथमा एकवचन।

यस्याश्वांसः प्रदिशि यस्य गावो

यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथांसः।

यः सूर्यं य उषसं जजान

यो अपां नेता स जनास इन्द्रः॥७॥

पदपाठ-यस्य। अश्वांसः। प्रऽदिशः। यस्य। गावः। यस्य। ग्रामाः। यस्य। विश्वे। रथांसः॥ यः। सूर्यम्। यः। उषसम्। जजान। यः। अपाम्। नेता। सः। जनासः। इन्द्रः॥

सा० भा०– यस्य सर्वान्तर्यामितया वर्तमानस्य प्रदिशि प्रदेशनेऽनुशासने अश्वासः अश्वा वर्तन्ते। यस्य अनुशासने गावः। यस्य अनुशासने ग्रामाः। ग्रसन्तेऽत्रेति ग्रामा जनपदाः। यस्य आज्ञायां विश्वे सर्वे रथासः रथा वर्तन्ते। यः च वृत्रं हत्वा सूर्यं जजान जनयामास। यः च उषसम्। तथा मन्त्रः 'जजान सूर्यमुषसं सुदंसाः' (ऋ०सं० ३.३२.८) इति। यः च मेघभेदनद्वारा अपां नेता प्रेरकः सः इन्द्रः इत्यादि प्रसिद्धम्।

अन्वय- यस्य प्रदिशि अश्वासः, यस्य गावः यस्य ग्रामाः, यस्य विश्वे रथासः, यः सूर्यम् यः उषसम् जजान्, यः अपाम् नेता, जनासः सः इन्द्रः।

पदार्थ- यस्य= जिसके, प्रदिशि= अनुशासन में, आज्ञा में, अश्वासः= घोड़े, यस्य= जिसके, गावः= गायें, यस्य= जिसके, ग्रामाः= ग्राम, गाँव, यस्य= जिसके, विश्वे= सम्पूर्ण, रथासः= रथ, यः= जो, सूर्यम्= सूर्य को, यः= जो, उषसम्= उषा को, जजान= उत्पन्न किया, यः= जो, अपाम्= जलों का, नेता= ले आने वाला, बरसाने वाला, जनासः= हे लोगों, सः= वह, इन्द्रः = इन्द्र।

अनुवाद- **जिसके अनुशासन (आज्ञा) में घोड़े हैं; जिसके (अनुशासन में) गाये हैं, जिसके (अनुशासन में) ग्राम हैं; जिसके (अनुशासन में) सम्पूर्ण रथ हैं; जिसने सूर्य को (उत्पन्न किया है), जिसने उषा को उत्पन्न किया है; जो (बादलों में से) जलों को लाने वाला (बरसाने वाला) है, हे लोगों! वह इन्द्र है।**

व्याकरण-

१. विश्वे- विश्व शब्द के प्रथमा बहुवचन का वैदिक रूप। लौकिक संस्कृत में विश्वाः बनता है।

२. अश्वासः, रथासः- ये क्रमशः अश्व और रथ के प्रथमा बहुवचन के वैदिक रूप हैं। लौकिक संस्कृत में अश्वाः और रथाः रूप बनता।

३. जजान- √जन् + लिट्, प्रथमपुरुष एकवचन।

४. नेता- √नी + तृच्, प्रथमा एकवचन।

यं क्रन्दसी संयती विह्वयेते

परेऽवर उभयाः अमित्राः।

समानं चिद्रथमास्थिवांसा

नाना हवेते स जनास इन्द्रः॥८॥

पदपाठ- यम्। क्रन्दसी इति। संयती इति सम्यती। विह्वयेते इति विऽह्वयेते। परे। अवरे। उभया। अमित्राः॥ समानम्। चित्। रथम् आतस्थिऽवांसा। नाना। हवेते इति। सः। जनासः। इन्द्रः॥

सा०भा०- यं क्रन्दसी रोदसी शब्दं कुर्वाणं मानुषी दैवी च द्वे सेने वा संयती परस्परं संगच्छन्त्यौ यमिन्द्रं विह्वयेते स्वरक्षार्थं विविधमाह्वयतः। परे उत्कृष्टाः अवरे अधमाश्च उभयाः उभयविधाः अमित्राः शत्रवः यमाह्वयन्ति। समानम् इन्द्ररथसदृशं रथम् आतस्थिवांसा आस्थितौ द्वौ रथिनौ तमेवेन्द्रं नाना पृथक्-पृथक् हवेते आह्वयेते। यद्वा समानमेकरथमारूढाविन्द्राग्नी हवेते यज्ञार्थं यजमानैः पृथगाहूयेते तयोरन्यतरः सः इन्द्रः नाहमिति।

अन्वय- क्रन्दसी संयती यम् विह्वयेते, परे अवरे उभया: अमित्राः समानम् रथम् आतस्थिवांसा नाना हवेते, जनासः! सः इन्द्रः।

पदार्थ- क्रन्दसी= शब्द (क्रन्दन) करती हुई, सिंहनाद करती हुई, जोर-जोर से चिल्लाती हुई, संयती= परस्पर युद्ध करती हुई, एक साथ गमन करती हुई, यम्= जिसको, विह्वयेते= विविध प्रकार से आह्वान करती हैं, बुलाती हैं, पुकारती हैं, परेः= उत्कृष्ट, शक्तिशाली, बलवान्, अवरे = निम्न श्रेणी के, निर्बल, उभयाः= दोनों, दोनों ओर के, अमित्राः= शत्रु, समानम् = सदृश, एक ही प्रकार के, एक, रथम्= रथ पर, आतस्थिवांसा= बैठे हुए, नाना= अनेक प्रकार से, विभिन्न प्रकार से, पृथक्-पृथक्, हवेते= आह्वान् करते हैं, बुलाते हैं, जनासः= हे मनुष्यों! सः = वह, इन्द्रः= इन्द्र।

अनुवाद- **सिंहनाद करती हुई तथा परस्पर युद्ध करती हुई (शत्रुओं की सेनाएँ) जिस देवता को विविध प्रकार से पुकारती हैं, (जिसको) बलवान् एवं निर्बल दोनों प्रकार से शत्रु (अपनी सहायता के लिए) बुलाते हैं; जिसको एक ही प्रकार के रथ पर बैठे हुए (दो योद्धा) (अथवा एक ही रथ पर बैठे हुए सारथि तथा योद्धा) विभिन्न प्रकार से बुलाते हैं, हे लोगों! वह इन्द्र है।**

व्याकरण-

१. क्रन्दसी- नपुंसकलिङ्ग 'क्रन्दस्' का प्रथमा द्विवचन।

२. संयती- सम् + √इ + शतृ + ङीप्, प्रथमा द्विवचन।

३. विह्वयेते- वि + √हू लट्, आत्मनेपद प्रथमपुरुष द्विवचन।

४. आतस्थिवांसा-आ + √स्था + क्वसु, प्रथमा द्विवचन वैदिकरूप, लौकिक संस्कृत में आतास्थिवांसौ रूप बनेगा।

५. हवेते- √हू + लट्, प्रथमपुरुष द्विवचन।